

### महत्वपूर्ण तिथियाँ

शोध सार भेजने की अंतिम तिथि:

31 जुलाई 2025

सम्पूर्ण शोधपत्र जमा करने की अंतिम तिथि:

10 अगस्त 2025

नोट- शोधपत्र प्रस्तुति हाइब्रिड मोड में किया जा सकता है।

### संरक्षक मंडल

प्रोफेसर (डॉ.) कुलदीप चंद अग्निहोत्री

प्रोफेसर (डॉ.) दिनेश चन्द्र राय

प्रोफेसर (डॉ.) संजय कुमार चौधरी

प्रोफेसर (डॉ.) समीर शर्मा

श्री अरुण शर्मा

श्री संजय कुमार

डॉ. सर्वजीत सिंह मान

### संयोजक

डॉ. गिरीश गौरव

### सह संयोजक

श्री यासिर अरफात

श्री सौरभ आनंद

### आयोजन समिति

प्रोफेसर (डॉ.) अनिल कुमार

डॉ. अमरेंद्र कुमार

डॉ. विश्व ज्योति

डॉ. संजय कुमार

डॉ. दामोदर गौतम

डॉ. अमित रंजन सिंह

डॉ. मंगला ठाकुर

श्री रोहन शर्मा

श्री अरविन्द गर्ग

श्रीमती रानी जयराम

श्री सोमचंद

### महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश

#### शोध सार

शब्द सीमा (250-350 शब्द)

हिंदी फोंट- कोकिला/मंगल/निर्मला

हिंदी फोंट का आकार- 16

अंग्रेजी फोंट- टाइम्स न्यू रोमन

अंग्रेजी फोंट का आकार- 12

पंक्ति रिक्ति 1.5

एपीए उद्धरण शैली

फाइल टाइप- माइक्रोसॉफ्ट वर्ड

#### सम्पूर्ण शोधपत्र

शब्द सीमा (4500-5000 शब्द)

हिंदी फोंट- कोकिला/मंगल/निर्मला

हिंदी फोंट का आकार- 16

अंग्रेजी फोंट- टाइम्स न्यू रोमन

अंग्रेजी फोंट का आकार- 12

पंक्ति रिक्ति 1.5

एपीए उद्धरण शैली

फाइल टाइप- माइक्रोसॉफ्ट वर्ड

शोध सार तथा सम्पूर्ण शोधपत्र

saptsindhufoundation1@gmail.com ई-मेल पर भेजें।

रजिस्ट्रेशन के लिए यहां क्लिक करें

अथवा क्यूआर कोड को स्कैन करें।

#### रजिस्ट्रेशन शुल्क

शिक्षक- ₹500

शोधार्थी- ₹300

विद्यार्थी- ₹200



#### बैंक विवरण

Account Holder Name:

**SAPT SINDHU FOUNDATION TRUST**

Account No: **43363270634**

Name of Bank: **State Bank of India**

IFSC Code: **SBIN0008846**

सम्पर्क-

9555305920, 8789266268, 8219815997, 9459781924



# सप्त सिंधु फाउंडेशन न्यास

द्वारा आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

## हड़प्पा

अथवा

## सिन्धु सरस्वती सभ्यता

(नामकरण के उभरते प्रतिमान)

22-23 अगस्त 2025

अकादमिक सहयोग

भारतीय, मत, पंथ, संप्रदाय, एवं सेमेटिक रिलीज़न अध्ययन केंद्र,  
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

हाइब्रिड मोड

स्थान:

ICSSR परिसर, पंजाब विश्वविद्यालय  
चंडीगढ़

# सप्त सिंधु फाउंडेशन न्यास

संगोष्ठी संदर्भ:-

## हड़प्पा अथवा सिन्धु सरस्वती सभ्यता: (नामकरण के उभरते प्रतिमान)

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में सप्त सिंधु क्षेत्र के 'हड़प्पा नामक' स्थान पर एक प्राचीन सभ्यता के अवशेष मिलने से पूरा तत्व की दुनिया में हड़कंप पैदा हो गई। हड़कंप मचने का कारण यह नहीं था कि एक अति प्राचीन सभ्यता की रूपरेखा दुनिया के सामने आई, बल्कि मूल कारण यह था कि उस काल में भारत के ऊपर निवेशवादी ब्रिटिश शासन व्यवस्था कार्य कर रही थी। भारत पर ब्रिटिश के द्वारा किए गए अनैतिक कब्जे को न्याय संगत ठहराने के लिए ब्रिटिश बुद्धिजीवी दुनिया में यह प्रचार कर रहे थे कि भारत पर शासन करना उनका प्राकृतिक स्वरूप से सही है, क्योंकि भारत विकास की यात्रा में बहुत पीछे छूट गया है। भारत को विकसित करने एवं यहाँ के लोगों को भी अन्य देशों के समकक्ष लाने के लिए ही ब्रिटिश यहाँ पर शासन कर रहे हैं। भारत 'वाइटमैन्स बर्डन' है, जिसे ब्रिटिश अपना कर्तव्य मानकर ढो रहा है। लेकिन हड़प्पा के सामने आ जाने से ब्रिटिश के द्वारा किए जा रहे अनैतिक एवं बेबुनियाद दुष्प्रचार को पूरी तरह से हिला कर रख दिया। इस समय तक पश्चिम में यूनान की सभ्यता, नील घाटी की सभ्यता, रोम की सभ्यता की चर्चा तो थी, किंतु इन सारी चर्चाओं के बीच हड़प्पा ने बिल्कुल नवीन खूँटा गाड़ दिया। किंतु एकदम से नवीन प्रतिमान आने के उपरांत उसके नामकरण की भी समस्या उत्पन्न हो जाना

स्वाभाविक रूप से होता है।

पुरातत्वकर्ताओं ने स्थान के आधार पर ही इसका नामकरण 'हड़प्पा सभ्यता' कर दिया, हड़प्पा नामक यह स्थान सिंधु घाटी के आसपास स्थित है, इसलिए सिंधु या इंडस घाटी की सभ्यता का प्रयोग भी किया। कालांतर में भारत में विशेषकर 'सप्त सिंधु क्षेत्र' राजस्थान व गुजरात के कई स्थानों पर 'हड़प्पा सभ्यता' के अवशेष मिलने लगे, ये सारे स्थान सिंधु नदी के किनारे पर स्थित नहीं थे। उनके स्थान 'सरस्वती नदी' के किनारों पर भी स्थित है। इसलिए इस सभ्यता के नामकरण को लेकर चर्चा होने लगी। नामकरण केवल सिंधु नदी के नाम को ही लेकर क्यों?

इसलिए भारत में इस सभ्यता का 'सरस्वती सिंधु सभ्यता' नाम भी प्रयोग में आने लगा। किंतु पश्चिम के पुरातत्वकर्ताओं ने तो 'सरस्वती नदी' को पहले ही काल्पनिक प्रमाणित करने का प्रयास कर चुके थे। वे अभी हड़प्पा या इंडस वैली पर ही रुके हुए हैं। किंतु अभी हाल ही में वर्तमान हरियाणा प्रांत के क्षेत्र में हुए उत्खनन ने सरस्वती को और भी केंद्र बिंदु में लाकर खड़ा कर दिया। किंतु इस सभ्यता के साथ एक और प्रश्न भी जुड़ गया क्या यह मृत सभ्यता है? या इसकी अद्यतन निरंतरता बनी हुई है। यह प्रश्न अत्यंत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि अभी तक यूनान एवं मिश्र इत्यादि प्राचीन सभ्यताओं की चर्चा विश्व के इतिहास में हो रही थी, वे सभी मृत सभ्यताएँ थीं। पश्चिम के लिए तो इन सभ्यताओं को मृत बनाना उनकी राजनीतिक एवं बौद्धिक मजबूरी थी क्योंकि तत्कालीन समय में जो उसकी प्रजा अथवा उसके अनुयायी थे, वह निरंतरता में अपने आज के शासकों से अधिक उन्नत अथवा सभ्य कैसे हो सकती थी।

तात्कालिक समय में भारत पर ब्रिटिश शासन था। इसी कारण वे अपने शासन को सही ठहराने हेतु 'आर्य आक्रमण' के सिद्धांत को प्रतिपादित किया। वर्तमान काल में हो रहे निरपेक्ष एवं भौतिक चिंतन के आलोक में उठ रहे प्रश्नों के प्रतिमानों के आलोक में पुनः विचार करने हेतु इस दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

उप-विषय:

- सरस्वती नदी के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक संदर्भ
- सिंधु जल प्रणाली
- सरस्वती सिंधु सभ्यता की वर्तमान काल तक की निरंतरता
- हरियाणा में सरस्वती नदी को प्रभावित करने के प्रयासों की समीक्षा
- रखीगढ़ी में हुए उत्खनन की सभ्यतागत महत्ता
- प्राचीन वैदिक काल अथवा हड़प्पा सभ्यता
- 'सरस्वती-सिंधु' सभ्यता काल निर्धारण की समस्या
- ब्राह्मी लिपि को पढ़ने के प्रयोग की समीक्षा

## सप्त सिंधु के फाउंडेशन न्यास

भारतीय शास्त्रों में वर्णित सप्त सिंधु क्षेत्र की भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं राजनीतिक व्यवहारों के ऊपर अनुसंधान कार्य में संलग्न संस्थान है। न्यास का पंजीकृत प्रधान कार्यालय दिल्ली में है एवं इसका उप-कार्यालय चकमोट (हिमाचल प्रदेश) में है। संस्थान अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शैक्षणिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करता है एवं अन्य शासकीय एवं गैर शासकीय संस्थानों से तालमेल कर अकादमी कार्य को संपादित करता रहा है। हिमाचल रिसर्च इन्स्टीट्यूट इसी न्यास के अधीन कार्य करता है। न्यास का अपना प्रकाशन कार्य सुचारु रूप से निरंतर कार्य करता आ रहा है।

### Important Dates

**Last date for Abstract Submission:**

31st July 2025

**Last date for Full Paper Submission**

10th August 2025

**Note: Paper presentations will be held in hybrid mode (both in-person and online).**

### Patrons

Prof. (Dr.) Kuldeep Chand Agnihotri

Prof. (Dr.) Dinesh Chandra Rai

Prof. (Dr.) Sanjay Kumar Chaudhary

Prof. (Dr.) Sameer Sharma

Shri Arun Sharma

Shri Sanjay Kumar

Dr. Sarvjeet Singh Maan

### Convener

Dr. Gireesh Gaurav

### Co-conveners

Shri Yasir Arfat

Shri Saurabh Anand

### Organizing Committee

Prof. (Dr.) Anil Kumar

Dr. Amarendra Kumar

Dr. Vishwa Jyoti

Dr. Sanjay Kumar

Dr. Damodar Gautam

Dr. Amit Ranjan Singh

Dr. Mangala Thakur

Shri Rohan Sharma

Shri Arvind Garg

Smt. Rani Jairaj

Shri Somchand

### Important Guidelines

#### Abstract Submission

Word Limit: 250–350 words

Font (Hindi): Kokila / Mangal / Nirmala

Font Size (Hindi): 16

Font (English): Times New Roman

Font Size (English): 12

Line Spacing: 1.5

Citation Style: APA

File Format: Microsoft Word (.doc/.docx)

#### Full Paper Submission

Word Limit: 4500–5000 words

Font (Hindi): Kokila / Mangal / Nirmala

Font Size (Hindi): 16

Font (English): Times New Roman

Font Size (English): 12

Line Spacing: 1.5

Citation Style: APA

File Format: Microsoft Word (.doc/.docx)

Send your Abstract and Full Paper to:  
**saptsindhufoundation1@gmail.com**

[Click Here for Registration](#)

or Scan the QR Code

#### Registration Fee

Academician- ₹500

Scholar- ₹300

Student- ₹200



#### Bank Details

Account Holder Name:

**SAPT SINDHU FOUNDATION TRUST**

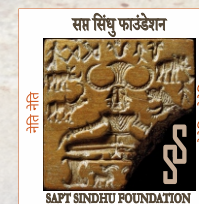
Account No: **43363270634**

Name of Bank: **State Bank of India**

IFSC Code: **SBIN0008846**

Contact Us:

9555305920, 8789266268, 8219815997, 9459781924



## Sapta Sindhu Foundation Trust

Presents

### Two-Day National Seminar

## Harappa

or

## Indus Saraswati Civilisation

(Emerging Paradigms of Nomenclature)

### 22-23 August 2025

#### Academic Partner

Centre of Bharatiya Panth, Matt, Sampraday  
and Semitic Religions,  
Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala

#### Mode: Hybrid

Venue:

**ICSSR Complex, Panjab University,  
Chandigarh**

# Sapta Sindhu Foundation Trust

## Seminar Theme :-

### Harappa or Indus Saraswati Civilisation: (Emerging Paradigms of Nomenclature)

In the early 1900s, archaeologists discovered the remains of a very ancient civilisation at a place called Harappa in the Sapta Sindhu region. This discovery caused a major stir- not just because it was ancient, but because it challenged the narrative promoted by the British rulers about India at the time.

At that time, India was under British rule. To justify their control, the British claimed that India was backward and needed their help to become "civilised." They argued it was their duty to govern India, calling it the "White Man's Burden." However, the uncovering of the Harappan Civilisation revealed to the world that India had once been home to a highly advanced society. This undermined the British narrative.

Until then, most people spoke about ancient civilisations such as Greece, Rome and Egypt. But the discovery of Harappa added something entirely new. As people began to study it, a new question arose: what should this civilisation be called?

Initially, it was named after the place where it was found - Harappa. Since Harappa is near the Indus River, the civilisation was also called the Indus Valley Civilisation. However, later discoveries of remains from the same civilisation were made in other parts of India, such as Rajasthan and Gujarat, which are not near the Indus River. Some of these locations lie along the ancient Saraswati River. This raised a significant question: why name the entire civilisation solely after the Indus River? Therefore, many in India began using the term Saraswati-Indus Civilisation. Nevertheless, some western scholars had earlier claimed the Saraswati River was mythical. Consequently, they persisted in calling it the Harappan or Indus Valley Civilisation.

Recent excavations in Haryana have provided strong evidence for the existence of the Saraswati River, bringing it back into scholarly focus. Another important question has emerged: is this civilisation extinct, or has it continued in some form until today? This is significant because civilisations like ancient Greece or Egypt are considered long gone. Western historians often found it necessary to label these civilisations "dead" to prevent the modern populations in those regions from being perceived as more advanced than their colonisers.

During British rule in India, the Aryan Invasion Theory was also promoted to suggest that Indian civilisation originated from outside, thereby helping to justify British governance. Today, new research and perspectives are prompting scholars to reconsider and pose new questions. This seminar aims to explore these issues in depth.

## Sub Theme:

- The history and geography of the Saraswati River
- The Indus River system
- The ongoing legacy of the Saraswati-Indus civilisation to the present day.
- Efforts to trace the Saraswati River in Haryana
- The civilizational importance of the archaeological excavations at Rakhigarhi
- Ancient Vedic period or Harappan civilisation
- Challenges in establishing the timeline of the Saraswati-Indus Civilisation
- Attempts to decipher and understand the ancient Brahmi script

## About Sapta Sindhu Foundation Trust:

This trust studies the geography, culture, history, literature and politics of the Sapta Sindhu region mentioned in ancient Indian texts. Its main office is in Delhi, with a branch in Chakmot, Himachal Pradesh. The trust supports learning and research by collaborating with both government and private institutions. It also runs the Himachal Research Institute and regularly publishes research work.